विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्तिः उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 23 जून 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

शब्द - विचार

पद, धातु ओर प्रातिपदिक

पद - सुबन्तं और तिङन्त को पद कहा जाता है।

पद

सुबन्त - संज्ञा व सर्वनाम के वे शब्द जिसके रूप बनते हैं; जैसे- रामः रामौ, रामाः।

तिङन्त - धातु रूपों को तिङन्त कहते हैं क्योंकि ये 'तिङ' आदि विभक्तियों से बनते हैं; जैसे पढ़ती, पड़त: पठन्ति।

संक्षेप में कह सकते हैं की विभक्ति युक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द और प्रत्यय युक्त धातुएं पद कहलाती है।

धातु - क्रिया शब्द, जैसे पठ्, नम्, गम्, लिख्, वद्, आदि को धातु कहते है।

प्रातिपदिक - धातु और प्रत्यय को छोड़कर सभी अर्थयुक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कृदन्त, तद्यतान्त और समासान्तः पद प्रातिपदिक कहलाते हैं।

वचन

शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि शब्द का प्रयोग एक के लिए हो रहा है, दो के लिए हो रहा है या दो से अधिक के लिए हो रहा है, उसे वचन कहते हैं संस्कृत भाषा में तीन वचन होते हैं।

वचन के तीन प्रकार

एकवचन - एक खंख्या के बोधक बालकः, छात्रः।

द्विवचन - दो संख्या के बोधक बालकौ, त्रौ

बहुवचन - दो से अधिक संख्या के बोधक बालकाः, छात्राः।